प्रेस विज्ञप्ति

लोक भवन, राँची

दिनांक : 20 सितम्बर, 2026 :-

(1) माननीय राज्यपाल श्री संतोष कुमार गंगवार ने आज आईआईटी (आईएसएम), धनबाद में आरोग्य भारती द्वारा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी-आईएसएम), धनबाद के सहयोग से आयोजित 'राष्ट्रीय पर्यावरण कार्यशाला' को संबोधित करते हुए कहा कि पर्यावरण, स्वास्थ्य और जीवनशैली एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। उन्होंने कहा कि भारतीय जीवन-दृष्टि में प्रकृति के प्रति सम्मान हमारी परंपरा का अभिन्न हिस्सा रहा है। आज जलवायु परिवर्तन, वायु प्रदूषण एवं जैव-विविधता के संरक्षण जैसी चुनौतियाँ हमारे सामने हैं। ऐसे समय में प्रकृति के साथ संतुलित एवं सह-अस्तित्वपूर्ण जीवन-दृष्टि की प्रासंगिकता और बढ़ जाती है।

राज्यपाल महोदय ने कहा कि पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान केवल सरकार के प्रयासों से संभव नहीं है। इसके लिए समाज, शैक्षणिक संस्थानों, वैज्ञानिकों, चिकित्सकों, औद्योगिक प्रतिष्ठानों एवं प्रत्येक नागरिक की सहभागिता आवश्यक है। जल एवं ऊर्जा

की बचत तथा प्रकृति के प्रति जिम्मेदार व्यवहार जैसे छोटे-छोटे प्रयास पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। उन्होंने कहा कि स्वस्थ जीवनशैली एवं पर्यावरण संरक्षण एक-दूसरे के पूरक हैं। उन्होंने इस क्रम में योग की अहमियत का उल्लेख करते हुए कहा कि योग शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक संतुलन एवं समग्र कल्याण की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

माननीय राज्यपाल ने कहा कि स्वास्थ्य के क्षेत्र में कार्य करते समय उपचार के साथ-साथ रोगों की रोकथाम, स्वस्थ जीवनशैली, संतुलित पोषण, योग एवं स्वच्छ पर्यावरण पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों एवं स्वास्थ्य संबंधी दृष्टिकोणों को एक मंच पर लाकर समग्र स्वास्थ्य की दिशा में सार्थक प्रयास किए जा सकते हैं। इस दृष्टि से आरोग्य भारती का कार्य विशेष रूप से प्रासंगिक है।

राज्यपाल महोदय ने कहा कि आईआईटी (आईएसएम), धनबाद जैसे प्रतिष्ठित तकनीकी संस्थानों की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के माध्यम से पर्यावरणीय चुनौतियों के व्यावहारिक एवं टिकाऊ समाधान विकसित किए जा

सकते हैं। जल संरक्षण, स्वच्छ ऊर्जा, अपशिष्ट प्रबंधन, प्रदूषण नियंत्रण तथा पर्यावरण-अनुकूल तकनीकों के क्षेत्र में अनुसंधान एवं नवाचार को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। उन्होंने युवाओं एवं विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे पर्यावरण संरक्षण को अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बनाएँ तथा अपने परिवार एवं समाज को भी इसके लिए प्रेरित करें।

---

(2) माननीय राज्यपाल श्री संतोष कुमार गंगवार ने आज आईआईटी (आईएसएम), धनबाद में आयोजित एकल अभियान के आचार्य एवं व्यास सम्मान समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि शिक्षा, संस्कार एवं सामाजिक जागरूकता के माध्यम से समाज के दूर-दराज क्षेत्रों में सकारात्मक परिवर्तन लाने में एकल अभियान की महत्वपूर्ण भूमिका है।

राज्यपाल महोदय ने कहा कि हर्ष का विषय है कि एकल विद्यालय अभियान की यात्रा का प्रारंभ धनबाद की धरती से हुआ। स्वर्गीय मदनलाल अग्रवाल जी द्वारा ग्रामीण एवं वनवासी क्षेत्रों में शिक्षा की ज्योति जलाने का जो प्रयास प्रारंभ किया गया था, वह आज एक व्यापक अभियान का रूप ले चुका है। उन्होंने कहा कि यह यात्रा इस बात का उदाहरण है कि समर्पण, निरंतर प्रयास एवं समाज के सहयोग से एक संकल्प व्यापक सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बन सकता है। उन्होंने कहा कि एकल अभियान का उद्देश्य केवल शिक्षा प्रदान करना नहीं है, बल्कि इसके माध्यम से आरोग्य, विकास, जागरण एवं संस्कार को भी समाज तक पहुँचाने का प्रयास किया जा रहा है। दूर-दराज के गाँवों में शिक्षा एवं जागरूकता के प्रसार से बच्चों के भविष्य के साथ-साथ परिवारों और पूरे

समुदाय में आत्मविश्वास एवं विकास की नई संभावनाएँ उत्पन्न होती हैं।

माननीय राज्यपाल ने कहा कि शिक्षा के साथ संस्कार एवं जीवन-मूल्यों का होना भी आवश्यक है। ज्ञान व्यक्ति को सक्षम बनाता है, जबकि संस्कार उसे सही दिशा प्रदान करते हैं। एकल श्रीहरि संस्कार शिक्षा के माध्यम से हरिकथा, सत्संग, परिवार मंगल तथा विभिन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के द्वारा लोगों को अपनी संस्कृति, परंपराओं एवं जीवन-मूल्यों से जोड़ने का कार्य किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि भारतीय परंपरा में कथा के माध्यम से ज्ञान, अनुभव एवं जीवन-मूल्यों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने की समृद्ध परंपरा रही है। एक अच्छा कथाकार केवल कथा का वाचन नहीं करता, बल्कि अपने विचारों एवं प्रेरक प्रसंगों के माध्यम से लोगों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन की प्रेरणा भी देता है। इस दृष्टि से गाँव-गाँव जाकर हरिकथा, सत्संग एवं सामाजिक चेतना का प्रसार करने वाले व्यास कथाकारों का योगदान महत्वपूर्ण है।

राज्यपाल महोदय ने कहा कि झारखण्ड की समृद्ध जनजातीय परंपरा, लोक संस्कृति एवं सामुदायिक जीवन इसकी विशिष्ट पहचान हैं। प्रकृति के प्रति

सम्मान, सामूहिकता एवं सामाजिक सहभागिता यहाँ की जीवन-पद्धति के महत्वपूर्ण अंग रहे हैं। आधुनिक विकास के साथ-साथ अपनी सांस्कृतिक विरासत एवं जीवन-मूल्यों का संरक्षण करना हम सभी का दायित्व है। उन्होंने कहा कि समाज का समग्र विकास केवल सरकारों के प्रयासों से संभव नहीं है। इसमें सामाजिक संस्थाओं, संगठनों एवं नागरिकों की सक्रिय भागीदारी भी आवश्यक है।

(3) माननीय राज्यपाल श्री संतोष कुमार गंगवार ने आज बेड़ो, राँची में आयोजित 'करम पर्व पूर्व संध्या' समारोह में समस्त झारखण्डवासियों को प्रकृति पर्व 'करमा पूजा' की हार्दिक शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि करम पर्व हमारी जनजातीय संस्कृति एवं प्रकृति के साथ गहरे संबंध का प्रतीक है। करम वृक्ष की डाली की स्थापना एवं पूजा तथा सामूहिक नृत्य-संगीत के माध्यम से इस पर्व को मनाने की परंपरा झारखण्ड की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की विशिष्ट पहचान है।

राज्यपाल महोदय ने कहा कि करम पर्व से जुड़ी लोककथाएँ अच्छे कर्म, परिश्रम, भाईचारे एवं सद्भाव का संदेश देती हैं। प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवन जनजातीय समाज की जीवन-पद्धति का अभिन्न हिस्सा रहा है। आज जब पूरा विश्व जलवायु परिवर्तन एवं पर्यावरणीय असंतुलन जैसी चुनौतियों का सामना कर रहा है, तब करम पर्व का प्रकृति के प्रति सम्मान एवं संरक्षण का संदेश और भी प्रासंगिक हो जाता है। करम पर्व की परंपराएँ प्राकृतिक संसाधनों के संतुलित उपयोग एवं आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित पर्यावरण सुनिश्चित करने की प्रेरणा देती हैं।

माननीय राज्यपाल ने कहा कि झारखण्ड की भाषाएँ, लोकगीत, लोकनृत्य, लोककलाएँ एवं पारंपरिक ज्ञान हमारी अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर हैं। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे अपनी सांस्कृतिक जड़ों को समझें तथा अपनी भाषा एवं परंपराओं के संरक्षण एवं संवर्धन में सक्रिय भूमिका निभाएँ। उन्होंने कहा कि आधुनिक शिक्षा एवं तकनीकी ज्ञान के साथ अपनी संस्कृति से जुड़े रहना हमारी पहचान को और मजबूत करेगा। उन्होंने कहा कि जनजातीय समाज के समग्र विकास के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य एवं पोषण पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। बुद्धिजीवियों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं को अपने ज्ञान एवं अनुभव का लाभ ग्रामीण तथा वंचित वर्गों तक पहुँचाने के लिए आगे आना चाहिए।

राज्यपाल महोदय ने कहा कि झारखण्ड की विशेषता इसकी बहुरंगी संस्कृति एवं सामाजिक सद्भाव में भी निहित है। यहाँ विभिन्न धर्मों, समुदायों, भाषाओं एवं संस्कृतियों के लोग मिल-जुलकर रहते हैं। हमारे पर्व-त्योहार लोगों को एक-दूसरे के करीब लाने, आपसी भाईचारे को मजबूत करने तथा भारत की 'विविधता में एकता' की महान परंपरा को सुदृढ़ बनाने का कार्य करते हैं।